दिल्ली में युधिष्ठिर

.....लीना मेहेंदळे

पहले भी सरकारी काम से दिल्ली आना-जाना होता था लेकिन पोस्टिंग पर यहां आने के बाद कुछ विस्तार से दिल्ली को समझना आरंभ किया- खासकर नई दिल्ली के रास्तों को - और पाया कि संसार के कई राजनायकों, देश भर के स्वतंत्रता सेनानियों और जिन तमाम सम्राटों ने दिल्ली पर राज किया उन सभी के नाम दिल्ली के विभिन्न मार्गों की पहचान कराते हैं। यहां ओलाफ पाल्मे मार्ग है, नासिर मार्ग है, महात्मा गांधी मार्ग हैं, अरविंदो मार्ग है। विश्व के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के नाम पर भी सड़कें हैं, जैसे कोपरनिकस मार्ग, न्यूटन मार्ग आदि।

लेकिन एक नाम नहीं है, जो सबस पहले होना चाहिए था। वह है सम्राट युधिष्ठिर का। पांडवों ने हस्तिनापुर से अलग हटकर यह नगर इंद्रप्रस्थ बसाया, यहां वर्षों तक राज किया और राजसूय यज्ञ किया। उसके पहले चारों दिशाओं में जाकर दिग्विजय करके लौटे। इसी शहर में मयसभा बनी। उसे बनाने वाला मयासुर उस जमाने का सर्वश्रेष्ठ वास्तुशिल्पी था और उसे विश्वकर्मा के समकक्ष माना जाता था। उसके नाम का भी कोई रासता दिल्ली में नहीं है। फिर युधिष्ठिर के दिन फिरे तो उसने हस्तिनापुर की राजसभा में सम्राट धृतराष्ट्र के साले शकुनि मामा से द्यूत खेलने का निमंत्रण स्वीकार किया। वहां हारे, वनवास किया, फिर कुरूक्षेत्र के मैदान में युद्ध किया। जीते तो हस्तिनापुर के सम्राट बन गए। उनके बाद परिक्षित, जनमेजय आदि उनके सभी वंशजों ने अपनी राजधानी हस्तिनापुर में ही रखी, इंद्रप्रस्थ में नहीं।

हस्तिनापुर गांव आज भी दिल्ली से कुछ हटकर हरियाणा में मौजूद है

वंशजों ने अगर हसितनापुर से ही राजकाज किया तो मध्ययुग में किसके द्वारा और किस समय भारत की राजधानी को वापस इंद्रप्रस्थ (या दिल्ली) लाया गया, यह इतिहास मुझे ज्ञात नहीं। पढ़ा तो इतना ही है कि बुद्ध के समय भारत भर में पढ़ाई के दो केंद्र थे - तक्षशिला और नालंदा। और सम्राट-पद चला गया था मगध अर्थात पटना में। तकरीबन तीन सौ वर्ष बाद वहां सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय अर्थात विक्रमादित्य ने राजधानी को पटना से हटाकर उज्जैन में बसाया। वहां से इतिहास की स्कूली किताबें छलांग लगाती हैं सम्राट हर्षवर्धन पर, जो स्थानेश्वर के सम्राट थे, और फिर वहां से पृथ्वीराज चौहान पर, जो दिल्ली के राजा थे। लेकिन यह दिल्ली हस्तिनापुर न होकर इंद्रप्रस्थ थी।

वही इंद्रप्रस्थ आज भी है। मुगल काल, ब्रिटिश काल से होते हुए आज भी वह भारत की राजधानी है। दिल्ली शहर एक विशाल भूभाग इंद्रप्रस्थ के नाम से जाना जाता है। यहां तक कि होटलों को भी यह नाम दिया जा चुका है। लेकिन उस सम्राट का नाम कहीं नहीं दिखता जिसने इसे बनाया और बसाया और यहां न्यायोचित राज किया। वह जो धर्म का पुत्र था और खुद धर्मराज के नाम से जाना जाता था। वह जिसने सत्य, धर्म, न्याय, नीति और शांति का पंचशील निर्मित किया और राज चलाने के ये पांच सिद्धांत स्थापित किए। उन शीलों के नाम से तो रास्ते हैं - और एक लंबा-सा पंचशील मार्ग भी है-लेकिन युधिष्ठिर का नाम नहीं। उसके चारों पराक्रमी भाइयों का नाम नहीं। उसकी सम्राज्ञी द्रोपदी का नाम नहीं, जबकि सुदूर पांडिचेरी में द्रोपदी के मंदिर भी हैं और वहां द्रोपदी को इसलिए पूजा जाता है कि वह नारी के अधिकार के लिए लड़ी।

जब बड़ी बड़ी सड़कों पर घूमकर यह निश्चित कर लिया कि इनमें युधिष्ठर का नाम नहीं है, तो आइशर कंपनी का दिल्ली मैप बुक खरीद कर देख

फिलहाल मैं युधिष्ठिर की ही बात कर रही हूं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब नई दिल्ली शहर की सड़कों का नामकरण किया गया होगा तब 'भारत की खोज' जैसे महान ग्रंथ के लेखक नेहरू प्रधानमंत्री थे। देश के अन्य दिग्गज इतिहासज्ञ यहां मौजूद थे। फिर क्या कारण है कि इस शहर को रचने-बसाने वाले युधिष्ठिर को भुला दिया गया। अगर हमारी लोकसभा के पन्नों में या किसी के स्मरण में यह कहानी हो, तो उसे भी हमें जानना चाहिए।